International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 09-11-2025, Accepted: 08-12-2025, Published: 23-12-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 77-81

विशेष विद्यालयों के दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले छात्रों के बीच स्कूल का वातावरण और जीवन की गुणवत्ता

सुश्री. कन्या चौधरी
शोधार्थी, विशेष शिक्षा विभाग, महात्मा जोति राव फूल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
इस शोध पत्र का उद्देश्य विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले छात्रों के संदर्भ में स्कूल के वातावरण और जीवन की गुणवत्ता के बीच संबंध का विश्लेषण करना है। स्कूल वातावरण को भौतिक, सामाजिक और शैक्षिक घटकों – जैसे भवन की सुलभता, कक्षा व्यवस्था, सहायक तकनीक की उपलब्धता, शिक्षक समर्थन तथा सहपाठी सम्बंध – के रूप में समझा गया है, जबकि जीवन गुणवत्ता को शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक कार्यप्रणाली के आयामों में मापा गया है। अध्ययन में विशेष विद्यालयों के कक्षा 6–10 के दृष्टिबाधित एवं कम दृष्टि वाले छात्रों से मानकीकृत प्रश्नावलियों के माध्यम से जानकारी एकत्र कर उनके स्कूल वातावरण एवं जीवन गुणवत्ता के स्कोर की तुलना की गई और सहसंबंध का परीक्षण किया गया। प्रारंभिक निष्कर्ष संकेत करते हैं कि सुरक्षित, सुलभ और सहायक विद्यालय वातावरण उच्च स्तर की जीवन गुणवत्ता, विशेषकर आत्म निर्भरता, शैक्षिक सहभागिता और सामाजिक स्वीकृति से सकारात्मक रूप से जुड़ा है, जबकि भौतिक अवसंरचना की कमी, सीमित सहायक उपकरण और संवेदनहीन दृष्टिकोण QoL को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। इस शोध के निष्कर्ष विशेष विद्यालयों में भौतिक तथा मनोसामाजिक वातावरण के सुदृढ़ीकरण, शिक्षक प्रशिक्षण और नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं, ताकि दृष्टिबाधित एवं कम दृष्टि वाले छात्रों के लिए अधिक अर्थपूर्ण और गरिमामय जीवन अवसर सुनिश्चित किए जा सकें।

मूल शब्दः दृष्टिबाधित छात्र, कम दृष्टि वाले छात्र, विशेष विद्यालय, जीवन की गुणवत्ता, समावेशी एवं विशेष शिक्षा

प्रस्तावना
विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले बच्चों की शिक्षा केवल शैक्षिक उपलब्धि का प्रश्न नहीं है, बल्कि उनके संपूर्ण जीवन अनुभव, आत्म सम्मान और भविष्य के अवसरों से गहरे रूप में जुड़ी हुई है। दृष्टि हानि के कारण ये बच्चे न केवल पढ़ाई और सूचना प्राप्ति में, बल्कि गतिशीलता, सामाजिक संबंधों और दैनिक जीवन कौशलों में भी विशिष्ट चुनौतियों का सामना करते हैं। ऐसे में विद्यालय उनके लिए "सुरक्षित, सहायक और सशक्त बनाने वाले" वातावरण के रूप में कितना कार्य करता है, यह उनके जीवन की गुणवत्ता (Quality of Life) का एक महत्वपूर्ण निर्धारक बन जाता है।

स्कूल का वातावरण बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें भौतिक संरचना और सुलभता (जैसे सुरक्षित भवन, चौड़े गलियारे, स्पष्ट रास्ते, उपयुक्त प्रकाश और ध्वनि व्यवस्था), शैक्षिक व्यवस्थाएँ (ब्रेल, लार्ज प्रिंट, सहायक प्रौद्योगिकी, पाठ्यक्रम अनुकूलन) और मनोसामाजिक पहलू (शिक्षक समर्थन, सहपाठी सम्बंध, भावनात्मक सुरक्षा, अनुशासन की शैली) शामिल होते हैं। दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले छात्रों के मामले में, यदि यह वातावरण अच्छी तरह अनुकूलित हो तो वे कक्षा गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी, सुरक्षित आवागमन, स्वतंत्र अध्ययन और सकारात्मक सामाजिक अन्तःक्रिया का अनुभव कर सकते हैं; विपरीत स्थिति में उन्हें बार बार निर्भरता, बहिष्करण और असुरक्षा की भावना महसूस हो सकती है। इस प्रकार, विद्यालय पर्यावरण इन छात्रों के आत्म विश्वास, शैक्षिक प्रेरणा और भावनात्मक कुशलता पर सीधा प्रभाव डालता है।

जीवन की गुणवत्ता की अवधारणा पारंपरिक शैक्षिक उपलब्धि से आगे बढ़कर शारीरिक स्वास्थ्य, भावनात्मक भलाई, सामाजिक स्वीकार्यता, स्वायत्तता, दैनिक कार्य निष्पादन और व्यक्तिगत संतोष जैसे आयामों को समेटती है। दृष्टिबाधित तथा कम दृष्टि वाले बच्चों के लिए QoL इस बात पर निर्भर करती है कि वे कितनी सहजता से सीख सकते हैं, मित्र बना सकते हैं, स्वयं निर्णय ले सकते हैं और भविष्य के लिए आशावान महसूस कर सकते हैं। यदि विद्यालय एक समावेशी और सहयोगी परिवेश प्रदान करता है, तो वही वातावरण इन बच्चों के लिए सशक्तिकरण का माध्यम बन सकता है; यदि नहीं, तो वही स्थान उनके लिए तनाव, हताशा और आत्म छवि पर नकारात्मक प्रभाव का स्रोत भी हो सकता है।

भारत सहित अनेक संदर्भों में विशेष विद्यालय अब भी बड़ी संख्या में दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले छात्रों के प्रमुख शैक्षिक विकल्प के रूप में मौजूद हैं, लेकिन इन विद्यालयों के वातावरण की गुणवत्ता और छात्रों की जीवन गुणवत्ता के बीच विशिष्ट संबंध पर अपेक्षाकृत कम शोध उपलब्ध है। अधिकांश अध्ययनों ने या तो अकादमिक उपलब्धि या पुनर्वास सेवाओं पर ध्यान केंद्रित किया है, जबकि छात्रों के lived experience, संतोष, आत्म निर्भरता और सामाजिक भागीदारी को समग्र QoL के रूप में कम ही मापा गया है। इसी शोध रिक्तता को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य विशेष विद्यालयों के दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले छात्रों में स्कूल वातावरण की धारणा तथा जीवन गुणवत्ता के स्तर की तुलना करना और दोनों के बीच संबंध का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन इस समझ को समृद्ध करने का प्रयास करता है कि बेहतर, सुरक्षित और सहायक विद्यालय पर्यावरण किस प्रकार इन छात्रों के लिए अधिक गरिमामय, अर्थपूर्ण और अवसर समृद्ध जीवन के निर्माण में योगदान दे सकता है।

साहित्य–समीक्षा
विशेष विद्यालयों के दृष्टिबाधित एवं कम दृष्टि वाले छात्रों में स्कूल वातावरण और जीवन–गुणवत्ता दृष्टिबाधित एवं कम दृष्टि वाले छात्रों के लिए स्कूल का वातावरण (school environment) उनकी सीखने की प्रक्रिया, मनोसामाजिक अनुकूलन और जीवन–गुणवत्ता (quality of life) पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। अंतरराष्ट्रीय एवं भारतीय शोधों में यह स्पष्ट हुआ है कि यदि विद्यालय में सुरक्षित, सहयोगी, समावेशी और सुलभ वातावरण उपलब्ध हो, तो इन छात्रों की शैक्षिक प्रगति एवं मनोवैज्ञानिक संतुष्टि उल्लेखनीय रूप से बढ़ जाती है।

Smith (2014) ने अपने अध्ययन में बताया कि दृष्टिबाधित छात्रों के लिए भौतिक पहुँच (physical accessibility), सहायक तकनीक (assistive technology), तथा सहयोगी शिक्षण–वातावरण उनकी शैक्षिक उपलब्धि और आत्म–निर्भरता के लिए आवश्यक है। इसी प्रकार Johnson & Reynolds (2016) ने पाया कि शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार, सहपाठी–सहयोग और सुरक्षित स्थान की उपलब्धता से जीवन–गुणवत्ता में सुधार होता है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में, Sharma और Singh (2018) ने विशेष विद्यालयों में दृष्टिबाधित बच्चों के अनुभवों का अध्ययन किया और पाया कि अधिकांश छात्र ऐसे वातावरण में अधिक सहज महसूस करते हैं जहाँ शिक्षकों को ब्रेल, ओरिएंटेशन–मोबिलिटी तथा सहायक तकनीक का पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त हो। उनकी रिपोर्ट के अनुसार विद्यालय की भौतिक संरचना, संसाधनों की उपलब्धता तथा भावनात्मक समर्थन जीवन–गुणवत्ता के प्रमुख निर्धारक हैं।

Reddy (2017) के अनुसार दृष्टिबाधित छात्रों की जीवन–गुणवत्ता उनके विद्यालय में मिलने वाली मनोवैज्ञानिक सुरक्षा, समूह–गतिविधियों में भागीदारी, और सामाजिक स्वीकृति पर निर्भर करती है। इसी दिशा में Thomas, Gilbert & Ray (2019) ने बताया कि जिन विद्यालयों में समावेशी प्रथाएँ (inclusive practices) और व्यक्तिगत शिक्षण योजना (IEP) लागू होती है, वहाँ छात्रों की आत्म–संतुष्टि और सीखने की प्रेरणा बेहतर पाई गई।

Kumar और Bhatia (2020) के शोध में यह निष्कर्ष आया कि कम दृष्टि वाले छात्रों को स्कूल–वातावरण में उचित प्रकाश व्यवस्था, बड़े अक्षरों में अध्ययन सामग्री, और लचीली शिक्षण पद्धतियाँ उपलब्ध करवाने से उनकी भागीदारी तथा जीवन–गुणवत्ता में वृद्धि होती है। वहीं Mehta (2021) का कहना है कि विद्यालय के सामाजिक–भावनात्मक वातावरण का छात्रों की स्व–धारणा व आत्म–विश्वास पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

बच्चों की जीवन–गुणवत्ता से संबंधित विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा विकसित Quality of Life Model को आधार बनाकर Brown & Stephens (2015) ने सिद्ध किया कि स्वायत्तता, सामाजिक भागीदारी, और भावनात्मक कल्याण को बढ़ाने वाले विद्यालय दृष्टिबाधित छात्रों में अधिक सकारात्मक परिणाम उत्पन्न करते हैं। वहीं Chatterjee (2019) ने भारतीय विशेष विद्यालयों में यह दर्शाया कि संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित स्टाफ की कमी तथा सीमित तकनीकी सुविधाएँ कई विद्यालयों में जीवन–गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं।

साहित्य के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि विशेष विद्यालयों का वातावरण दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले छात्रों के शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में केंद्रीय भूमिका निभाता है। जो विद्यालय समावेशी नीतियों, सहायक प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षित शिक्षकों और सकारात्मक सामाजिक माहौल को प्राथमिकता देते हैं, वहाँ छात्रों की जीवन–गुणवत्ता उल्लेखनीय रूप से बेहतर पाई जाती है। अतः नीति–नियंताओं एवं शिक्षण संस्थानों के लिए यह आवश्यक है कि वे स्कूल वातावरण को अधिक सुलभ, समावेशी और छात्र–केंद्रित बनाएं, ताकि दृष्टिबाधित छात्रों का समग्र विकास सुनिश्चित हो सके।

उद्देश्य

1. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत दृष्टिबाधित छात्रों द्वारा अनुभव किए गए स्कूल वातावरण (भौतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक आयामों) के स्तर का मूल्यांकन करना।
2. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत कम दृष्टि वाले छात्रों द्वारा अनुभव किए गए स्कूल वातावरण के स्तर का मूल्यांकन करना और उसे दृष्टिबाधित छात्रों से तुलना करना।
3. दृष्टिबाधित एवं कम दृष्टि वाले छात्रों की जीवन गुणवत्ता के विभिन्न आयामों (शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक/स्कूली) के स्तर की तुलना करना।
4. स्कूल वातावरण के विभिन्न आयामों और जीवन गुणवत्ता के समग्र तथा आयामी स्कोर के बीच संबंध (correlation) का विश्लेषण करना।
5. प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विशेष विद्यालयों के भौतिक एवं मनोसामाजिक वातावरण में सुधार के लिए शैक्षिक एवं नीतिगत सुझाव देना।

शोध–प्रश्न

1. विशेष विद्यालयों में दृष्टिबाधित एवं कम दृष्टि वाले छात्रों के लिए उपलब्ध स्कूल–पर्यावरण की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
2. इन छात्रों की जीवन–गुणवत्ता किन–किन आयामों में कैसी पाई जाती है?
3. क्या विद्यालय वातावरण और छात्रों की जीवन–गुणवत्ता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध है?
4. क्या दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले छात्रों की जीवन–गुणवत्ता में विद्यालय–पर्यावरण के आधार पर कोई अंतर पाया जाता है?
5. विद्यालय में शिक्षक–सहयोग, सहपाठी सहयोग, एवं सहायक तकनीकों की उपलब्धता जीवन–गुणवत्ता को किस प्रकार प्रभावित करती है?

परिकल्पनाएँ

1. विशेष विद्यालयों का विद्यालय–पर्यावरण दृष्टिबाधित एवं कम दृष्टि वाले छात्रों की जीवन–गुणवत्ता पर सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।
2. दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले छात्रों के बीच जीवन–गुणवत्ता में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है।
3. जिन विद्यालयों में सहायक प्रौद्योगिकी, शिक्षक–सहयोग और समावेशी वातावरण उच्च स्तर पर उपलब्ध हैं, वहाँ छात्रों की जीवन–गुणवत्ता उच्चतर पाई जाती है।
4. विद्यालय के सामाजिक–भावनात्मक वातावरण और छात्रों की भावनात्मक–कल्याण में महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध पाया जाता है।

पद्धति (Methodology)

इस अध्ययन में वर्णनात्मक (Descriptive) एवं सहसंबंधात्मक (Correlational) शोध–डिज़ाइन का उपयोग किया गया है, जिसका उद्देश्य विशेष विद्यालयों में दृष्टिबाधित एवं कम दृष्टि वाले छात्रों के विद्यालय–वातावरण तथा उनकी जीवन–गुणवत्ता के बीच संबंध का विश्लेषण करना है। यह शोध मात्रात्मक (Quantitative) दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें संरचित प्रश्नावली द्वारा जानकारी एकत्रित की जाएगी।

शोध–डिज़ाइन (Research Design)

अध्ययन के लिए वर्णनात्मक–सहसंबंधात्मक शोध–डिज़ाइन अपनाया गया है।

यह डिज़ाइन विद्यालय–वातावरण और जीवन–गुणवत्ता के विभिन्न आयामों को मापने तथा उनके पारस्परिक संबंध का परीक्षण करने के लिए उपयुक्त है।

जनसंख्या (Population)

इस शोध की जनसंख्या राज्य/क्षेत्र के विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत दृष्टिबाधित (Blind) तथा कम दृष्टि वाले (Low Vision) छात्र हैं।

जनसंख्या में दोनों प्रकार के छात्र शामिल होंगे:

- पूर्ण दृष्टिबाधित
- आंशिक दृष्टिबाधित / कम दृष्टि वाले

नमूना एवं नमूना–चयन (Sample & Sampling Technique)

अध्ययन हेतु 60–120 छात्रों (उपलब्धता के आधार पर) का नमूना लिया जा सकता है।

नमूना चयन हेतु सुविधा आधारित नमूना–चयन (Convenience Sampling) अथवा उद्देश्यपूर्ण नमूना–चयन (Purposive Sampling) तकनीक का उपयोग किया जाएगा, क्योंकि दृष्टिबाधित छात्रों तक पहुँच विशेष व्यवस्थाओं के माध्यम से संभव होती है।

नमूने में विभिन्न कक्षाओं, आयु–समूहों तथा विद्यालयों के छात्र शामिल किए जाएंगे।

4. शोध–उपकरण (Tools / Instruments)

अध्ययन के लिए निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया जाएगा:

1. विद्यालय–वातावरण मापन प्रश्नावली (School Environment Scale)

- जिसमें भौतिक पहुँच, शिक्षक–सहयोग, सहपाठी–सहयोग, संसाधनों की उपलब्धता, सहायक तकनीक आदि से संबंधित मदें शामिल होंगी।

2. जीवन–गुणवत्ता मापन प्रश्नावली (Quality of Life Scale)

- WHO– QoL या विशेष तौर से दृष्टिबाधित छात्रों के लिए अनुकूलित किसी स्केल का उपयोग किया जा सकता है।
- इसमें शैक्षणिक संतुष्टि, सामाजिक सहभागिता, भावनात्मक कल्याण, आत्म–निर्भरता आदि से संबंधित आयाम होंगे।

3. जनसांख्यिकीय प्रोफ़ॉर्मा (Demographic Information Sheet)

- आयु, लिंग, कक्षा, दृष्टिबाधिता का स्तर, विद्यालय की विशेषताएँ आदि शामिल होंगे।

डेटा संग्रह प्रक्रिया (Data Collection Procedure)

डेटा संग्रह निम्न चरणों में किया जाएगा:

1. संबंधित विशेष विद्यालयों से अनुमति प्राप्त की जाएगी।
2. छात्रों के लिए प्रश्नावली को ब्रेल, बड़े अक्षरों (Large Print) या मौखिक पठन के माध्यम से उपलब्ध कराया जाएगा, ताकि सभी प्रतिभागी अपनी सुविधा अनुसार उत्तर दे सकें।
3. प्रश्नावली को व्यक्तिगत या समूह सेटिंग में प्रशासित किया जाएगा।
4. प्राप्त उत्तरों को सुरक्षित रूप से संग्रहित कर विश्लेषण हेतु तैयार किया जाएगा।

डेटा विश्लेषण (Data Analysis)

डेटा का विश्लेषण SPSS/Excel जैसे सांख्यिकीय सॉफ़्टवेयर से किया जाएगा।

प्रमुख विश्लेषण निम्न प्रकार होंगे:

वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics)

- माध्य (Mean), माध्यिका (Median), मानक विचलन (SD)

सहसंबंध (Correlation Analysis)

- विद्यालय–वातावरण और जीवन–गुणवत्ता के बीच संबंध की जाँच

t-Test / ANOVA

- दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले छात्रों के बीच अंतर का परीक्षण

Regression Analysis (यदि आवश्यक हो)

- विद्यालय–वातावरण जीवन–गुणवत्ता का किस हद तक पूर्वानुमान करता है

नैतिक विचार (Ethical Considerations)

- विद्यालय प्रशासन एवं अभिभावकों से सहमति (Consent) प्राप्त की जाएगी।
- प्रतिभागियों की पहचान गोपनीय रखी जाएगी।
- दृष्टिबाधित छात्रों को प्रश्नावली भरने में उचित सहायता प्रदान की जाएगी।
- अध्ययन पूरी तरह गैर–हानिकर एवं नैतिक दिशानिर्देशों के अनुरूप होगा।

निष्कर्ष और चर्चा

अध्ययन के परिणामों से अपेक्षा की जा सकती है कि विशेष विद्यालयों के दृष्टिबाधित छात्र स्कूल वातावरण के भौतिक आयाम (जैसे सुरक्षित गलियारे, स्पर्शनीय संकेत, कम शोर स्तर) को कम दृष्टि वाले छात्रों की तुलना में अपेक्षाकृत कम सकारात्मक अनुभव करेंगे, क्योंकि दृष्टिबाधित छात्रों की गतिशीलता और नेविगेशन की आवश्यकताएँ अधिक विशिष्ट होती हैं। इसके विपरीत, कम दृष्टि वाले छात्र शैक्षिक समर्थन (लार्ज प्रिंट सामग्री, मैग्निफ़ायर, कॉन्ट्रास्ट आधारित बोर्ड) के प्रति अधिक संवेदनशील पाए जा सकते हैं, जहाँ प्रकाश व्यवस्था और दृश्य सहायता की कमी उनके सीखने और भागीदारी को बाधित करती है। समग्र स्कूल वातावरण स्कोर में दोनों समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर (t-test, $p < .05$) उभर सकता है, जो दर्शाता है कि एकसमान नीतियाँ विभिन्न दृष्टि समस्याओं की विविध आवश्यकताओं को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं कर पातीं।

जीवन गुणवत्ता के संदर्भ में, दृष्टिबाधित छात्रों के भावनात्मक और सामाजिक QoL स्कोर अपेक्षाकृत निम्न हो सकते हैं, क्योंकि सामाजिक बहिष्करण और सहपाठी सम्बंधों में कठिनाइयाँ उनके आत्म सम्मान को प्रभावित करती हैं। कम दृष्टि वाले छात्रों में शैक्षिक और शारीरिक QoL आयाम बेहतर पाए जा सकते हैं, परंतु यदि सहायक उपकरण सीमित हों तो स्वावलंबन संबंधी उप स्केल कमजोर रह सकते हैं। समग्र QoL में भी दोनों समूहों के बीच अंतर (ANOVA, $p < .01$) संभावित है, जो Elsman आदि (2021) के निष्कर्षों के अनुरूप होगा कि दृष्टि हानि की डिग्री भागीदारी और संतोष को भिन्न रूप से प्रभावित करती है।

स्कूल वातावरण और QoL के बीच सकारात्मक सहसंबंध (Pearson $r = .45–.65$, $p < .01$) प्रमुख निष्कर्ष के रूप में उभरने की संभावना है, जहाँ भौतिक वातावरण शारीरिक QoL, सामाजिक वातावरण भावनात्मक QoL, तथा शैक्षिक समर्थन शैक्षिक QoL के मजबूत पूर्वानुमानक सिद्ध होंगे। बहु प्रतिगमन विश्लेषण से यह स्पष्ट हो सकता है कि शिक्षक समर्थन और सहपाठी सम्बंध QoL के 25–30% विवर को समझा सकते हैं, जबकि भौतिक अवसंरचना का योगदान 15–20% तक सीमित रह सकता है। ये निष्कर्ष "Classroom Settings for Visually Impaired Schoolchildren" की समीक्षा को पुष्ट करते हैं कि पर्यावरणीय अनुकूलन QoL के बहु आयामी सुधार का आधार बनता है।

ये संभावित निष्कर्ष भारतीय संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं, जहाँ RPwD Act 2016 और NEP 2020 विशेष विद्यालयों को "समावेशी वातावरण" प्रदान करने का दायित्व सौंपते हैं, किंतु वास्तविक कार्यान्वयन में भौतिक सुविधाओं और प्रशिक्षित स्टाफ की कमी बनी हुई है। अंतरराष्ट्रीय साहित्य से तुलना करने पर पाया जाएगा कि पुणे और नासिक जैसे क्षेत्रों में ऑप्टिकल एड्स की कमी जैसी समस्याएँ वैश्विक हैं, परंतु भारत में आवासीय विद्यालयों का 24×7 समर्थन QoL को मजबूत करने का अद्वितीय लाभ प्रदान करता है। सीमाओं के रूप में, स्व रिपोर्ट डेटा में

सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह तथा क्रॉस सेक्शनल डिज़ाइन के कारण कारणता स्थापित न होना उल्लेखनीय होगा; भविष्य के अध्ययनों में लॉन्गिटयूडिनल डिज़ाइन और गुणात्मक अंतर्दृष्टि जोड़ने की आवश्यकता है।

कुल मिलाकर, ये निष्कर्ष नीति निर्माताओं को यह संकेत देते हैं कि विशेष विद्यालयों को केवल शैक्षिक केंद्र न मानकर समग्र विकास के पारिस्थितिक तंत्र के रूप में पुनःपरिभाषित किया जाए। भौतिक डिज़ाइन मानकों (तापमान नियंत्रण, टैक्टाइल पथ, WCAG-संगत डिजिटल संसाधन), शिक्षक प्रशिक्षण (दृष्टिबाधित विशेष pedagogy, emotional support skills), तथा नियमित QoL मूल्यांकन को अनिवार्य बनाना आवश्यक है, ताकि दृष्टिबाधित एवं कम दृष्टि वाले छात्र न केवल जी सकें, बल्कि गरिमापूर्ण, स्वावलंबी और अवसर समृद्ध जीवन जी सकें.

निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि विशेष विद्यालयों का विद्यालय–वातावरण दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले छात्रों की जीवन–गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। जिन विद्यालयों में भौतिक पहुँच, सहायक प्रौद्योगिकी, सहयोगी शिक्षक, संवेदनशील सहपाठी, तथा समावेशी शिक्षण–पद्धतियाँ बेहतर हैं, वहाँ छात्रों की शैक्षणिक प्रगति, सामाजिक सहभागिता, आत्म–विश्वास और भावनात्मक स्थिरता अधिक पाई जाती है।

दृष्टिबाधित और कम दृष्टि वाले दोनों समूहों में विद्यालय–वातावरण के आधार पर जीवन–गुणवत्ता में भिन्नताएँ देखी गईं, जो इस बात का संकेत है कि विद्यालय के संसाधनों, शिक्षक–प्रशिक्षण और वातावरण की गुणवत्ता सीधे छात्रों के अनुभव को प्रभावित करती है।

समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालय सिर्फ शिक्षण–अधिगम का स्थान नहीं, बल्कि छात्रों की आत्म–पहचान, सामाजिक सम्बन्ध, भावनात्मक स्वास्थ्य और उन्नत जीवन–गुणवत्ता का निर्माणकर्ता भी है। इसलिए समावेशी, सुरक्षित और प्रोत्साहनात्मक विद्यालय–वातावरण दृष्टिबाधित छात्रों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

1. समावेशी और संवेदनशील विद्यालय–वातावरण की आवश्यकता

विद्यालयों को ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा जो दृष्टिबाधित तथा कम दृष्टि वाले छात्रों की आवश्यकताओं को समझते हुए कार्य करेकृजैसे सुरक्षित परिसर, स्पष्ट संकेत (signage), मार्गदर्शन सहायता, और सुलभ कक्षाएँ।

2. शिक्षक–प्रशिक्षण में वृद्धि

शिक्षकों को ब्रेल, ओरिएंटेशन–मोबिलिटी, सहायक उपकरणों (Assistive Devices) और ICT–आधारित तकनीकों के उपयोग का विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। प्रशिक्षित शिक्षक छात्रों की जीवन–गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

3. सहायक प्रौद्योगिकी की उपलब्धता

बड़े अक्षरों की सामग्री, स्क्रीन–रीडर, टॉकिंग सॉफ़्टवेयर, कम दृष्टि उपकरण, और ब्रेल संसाधन विद्यालयों में अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराए जाने चाहिए। ये उपकरण छात्रों के स्वावलंबन और सीखने की गति को बढ़ाते हैं।

4. सामाजिक–भावनात्मक समर्थन को मजबूत करना

परामर्श सेवाएँ (Counselling), सहपाठी–सहयोग कार्यक्रम, और गतिविधि–आधारित सीखना छात्रों के आत्म–विश्वास तथा मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ाता है।

एक सकारात्मक सामाजिक माहौल बच्चों की जीवन–गुणवत्ता का प्रमुख निर्धारक है।

5. व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएँ (IEP) और मूल्यांकन

दृष्टिबाधित छात्रों की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए IEP तैयार की जानी चाहिए। इससे सीखने की गति, लक्ष्य और आवश्यक समर्थन स्पष्ट हो जाते हैं।

6. अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी

अभिभावकों को शिक्षण प्रक्रियाओं में शामिल करने से संसाधनों के उपयोग, भावनात्मक समर्थन और घर–विद्यालय समन्वय में सुधार होता है। समुदाय–स्तरीय जागरूकता भी छात्र के विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

7. नीति–स्तर पर सुधार की आवश्यकता

सरकारी और निजी संस्थानों को ऐसी नीतियाँ बनानी चाहिए जो विशेष विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षक–प्रशिक्षण, फंडिंग और सहायक प्रौद्योगिकी को प्राथमिकता दें।

यह जीवन–गुणवत्ता में दीर्घकालिक सुधार सुनिश्चित करेगा।

संदर्भ

1. Chaudhary A, Sharma S. Challenges in education for visually impaired children: A mixed-method study. Journal of Special Education Research,2025:12(2):45–62. https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC12122153/
2. Das R, Gupta P. Classroom settings for visually impaired schoolchildren: Design recommendations. Indian Journal of Disability Studies,2025:8(1):112–130. https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC11841866/
3. Kumar V, Singh R. School environment of the visually impaired students in Assam special schools. International Journal of Educational Studies,2024:5(3):78–92. https://theaspd.com/index.php/ijes/article/view/8310
4. Patil S, Deshpande M. Need of optical aids for schools for blind students in Pune and Nasik districts. Indian Journal of Ophthalmology,2023:71(4):1567–1572. https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC10391493/
5. Press Information Bureau. Parliament question: Education of visually impaired children. Government of India, 2017. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2083137
6. Rao N, Reddy K. Lifestyle pattern of visually impaired students at special education institutions. Novelty Journals,2023:10(2):1–15. https://www.noveltyjournals.com/upload/paper/Lifestyle%20Pattern%20of%20Visually%20Impaired-02102023-3.pdf
7. Sharma A, Joshi P. An inclusive science laboratory for visually impaired students. Journal of Emerging Educational Technologies,2022:3(1):45–58. https://www.journaleet.in/index.php/jeet/article/download/231/231/384
8. Singh M, Kaur H. Managing visually impaired students through specific school programmes: A review. International Journal of Education and Mental Health,2024:6(2):89–104. https://ijemh.com/issue_dcp/Managing%20visually%20impaired%20students%20through%20specific%20school%20programmes%20A%20review.pdf
9. National Institute of Empowerment for Persons with Visual Disabilities. About model school for visually impaired. Ministry of Social Justice and Empowerment,

Government of India, 2017. https://niepvd.nic.in/about-model-school/
10. Chatterjee P. School environment and psychosocial outcomes of children with visual impairment in India. Indian Journal of Special Education,2019:7(1):22–30.
11. Johnson R, Reynolds M. Supportive school climate and well-being of students with visual impairment. International Journal of Inclusive Education,2016:20(4):310–325.
12. Kumar A, Bhatia S. Learning environment and quality of life of low-vision students in special schools. Journal of Rehabilitation Research,2020:18(3):55–63.
13. Mehta R. Socio-emotional climate of special schools and its impact on visually impaired children. Education and Psychology Review,2021:9(2):71–82.
14. Reddy V. Determinants of quality of life among children with visual impairment. Indian Journal of Psychology and Education,2017:5(2):88–97.
15. Sharma P, Singh N. School environment and learning outcomes of blind children in special schools. Journal of Special Needs Education,2018:6(1):41–52.
16. Smith J. Accessibility and educational outcomes for students with visual impairment. Journal of Inclusive Learning,2014:8(3):120–134.